समस्तीपुर जनपद में माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

डा. एस. पी. यादव
157/173 शेशपुर
निकट राजकीय बस स्टेशन
जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

श्वेता कुमारी
शोधकर्त्री
वाइ.बी.एन. विश्वविद्यालय
नामकुम, राँची (झारखण्ड)

1.प्रस्तावना

आधुनिक समय में सिर्फ बौद्धिक विकास ही पर्याप्त नहीं है, जहाँ सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास पर जोर दिया जाता है और इस प्रकार सर्वांगीण विकास व्यक्तित्व वाला समाज ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है। विश्व में सभी व्यक्ति समान नहीं होते हर एक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है, इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेषताएँ होती है। जो उसे दूसरे व्यक्ति से पृथक करती है, वर्तमान युग में वैयक्तिक विभिन्नता के सिद्धान्त ने शिक्षा को इतना अधिक प्रभावित किया है कि बिना इसके शिक्षा असंभव हो गई है। इसलिए कक्षा के सभी बालक एक प्रकार या शैली से अधिगम की क्रिया को सफलता पूर्वक सम्पादित नहीं कर पाते हैं। प्रत्येक बालक की शारीरिक, मानसिक, विभिन्नताओं के कारण ही अधिगम के स्तर व उसी के अनुरूप उसकी सृजनात्मकता की भी पहचानना अति आवष्यक है ताकि बालक सही व उपयुक्त आगमों के द्वारा उद्देष्य को प्राप्त कर सकें। इस प्रकार सृजनात्मकता सामान्यतः ज्ञानात्मक प्रक्रिया और उत्पाद से अधिक प्रभावित होती है इसके अध्ययन से शिक्षक को उन विद्यार्थियों की पहचान में मदद मिल जाती है। जिनकी ज्ञान अर्जित करने की शैली समान प्रकृति की है। इसके द्वारा उन्हें लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित भी किया जा सकता है।

मनुष्य का मस्तिष्क अनेक शक्तियों में विभक्त होता है। ये शक्तियाँ विभिन्न कोष्ठों में निहित है। मानव में सृजनात्मकता शक्ति होती है। जिसके कारण समाज को विकास में सहायता मिलती है, बहुत से मानवीय क्रिया–कलाप सृजनात्मकता पर आधारित है, जब कभी कोई अच्छी कविता या चित्रकार अपने भावों को कलाकृति के रूप में प्रकट करता है, अथवा कोई इंजीनियर मशीन बनाता है तब ये लोग अपनी सृजनात्मक शक्ति का उपयोग करते हैं। सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है इसकी उत्पति में चिंतन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विकार उत्पन्न होते हैं साधारण रूप में नये सम्बन्धों में प्रकट करना ही सृजनात्मकता है, इस प्रकार की सृजनात्मकता सभी जगह प्रकट होती है। चाहे हम चिंतन में लीन हो अथवा किसी खेल में अथवा अध्ययन में। हम प्रत्येक क्रिया को पूर्व सम्बन्धों को नये सम्बन्धों में परिवर्तित कर सकते हैं, पुराने आकारों को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं, यहाँ तक कि सृजनात्मकता को पढ़ा भी जा सकता है अथवा याद भी किया जा सकता है। किसी समस्या पर कार्य करते हुए कभी–कभी ऐसा भी होता है जब आदत कार्य नहीं करती उस अवस्था में कुछ नई बातें जोड़नी पड़ती है, इससे यह विधित होता है कि सृजनात्मकता केवल प्रतिभाशाली व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति में नए विचार नई अन्तर्दृष्टि तथा कार्य करने का ढंग होता है। सृजनशील व्यक्ति के लिए प्रत्येक विचार अथवा अभिव्यक्ति सृजनात्मकता का उदाहरण है। चाहे दुसरे लोगों में भी इससे मिलते–जुलते विचार अथवा अभिव्यक्ति हो पर यह एक मौलिक हो । दुसरे शब्दों में सृजनात्मकता किसी न किसी रूप में उत्पादन मूर्त या अमूर्त किसी भी रूप में हो सकता है, विज्ञान कला तकनीकी आदि के क्षेत्रों में सृजनात्मकता का रूप मूर्त होता है, जबकि साहित्यिक रचनाओं में इसका रूप अमूर्त होता है। प्रत्येक देश का भूत, वर्तमान, भविष्य वहाँ की जनता पर निर्भर करता है क्योंकि आज के बालक कल का

भविष्य हुआ करते हैं। इसी सन्दर्भ में शोधकत्री ने विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया।

2.सृजनात्मकता

सृजनात्मकता किसी न किसी रूप में उत्पादन से या नवीन रचना से सम्बन्धित है, यह उत्पादन मूर्त या अमूर्त किसी भी रूप में हो सकता है। विज्ञान, कला, तकनीकी आदि के क्षेत्रों में सृजनात्मकता रूप मूर्त होता है। जबकि साहित्यिक रचनाओं आदि के क्षेत्रों में इसका रूप अमूर्त होता है। सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्ध का ज्ञान होता है, इसकी उत्पति में चिंतन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विकार उत्पन्न होते हैं।

3.शोध के उददेश्य

1.माध्यमिक विद्यालयों के हिन्दी माध्यमों से अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2.माध्यमिक विद्यालय के अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

4.शोध परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.अध्ययन का परिसीमन

किसी भी अनुसंधान के वैध व उपयोगी परिणामों को निष्चित समय में प्राप्त करने हेतु एक मापदण्ड का कार्य किया जाये, समय पर पूरा कर सकें। समय सीमा की दृष्टि में रखते हुए अध्ययन के क्षेत्र का निम्नानुसार परिसीमन किया गया है।

1. **क्षेत्र की दृष्टि से** – भौगोलिक दृष्टि से यह अध्ययन यादृच्छिक विधि से बिहार के संभाग समस्तीपुर तक ही सीमित किया गया है।
2. **विद्यालय की दृष्टि से** – प्रस्तुत शोध कार्य यादृच्छिक विधि से बिहार बोर्ड के पाठयक्रमों द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।
3. **कक्षा एवं विषय की दृष्टि से** – प्रस्तुत शोध कार्य यादृच्छिक विधि से केवल माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। शोध की दृष्टि से इस अध्ययन में केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन किया गया।

6.शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निष्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली है। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

7.उपकरण

वैज्ञानिक शोध कार्य के अन्तर्गत किसी समस्या के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक उपकरण एवं वैज्ञानिक प्रकिया का चयन करना पड़ता है, इससे समस्या के निष्कर्ष विष्वसनीय एवं वैध होते हैं। इस अध्ययन में निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया।

8.प्रमाणिक उपकरण

सृजनात्मक प्रमापनी – डॉ भगवती लाल व्यास द्वारा निर्मित।

9.न्यादर्श

प्रत्येक अध्ययन का एक शोध क्षेत्र होता है जिसे समष्टि कहते हैं, पूर्ण जाति के सम्पूर्ण जनसंख्या की सभी इकाईयों का अध्ययन में आंकड़े एकत्रित करना कठिन होता है इसलिए सम्पूर्ण समष्टि में से प्रतिनिधि के रूप में चयन किया जाता है जिनमें समष्टि की सभी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व होता है ऐसे अंश को न्यादर्श कहते हैं।

- अनुसंधानकर्त्री ने बिहार के समस्तीपुर संभाग का चयन यादृच्छिक विधि से किया है तथा 20 माध्यमिक विद्यालयों का चयन भी यादृच्छिक विधि से किया गया है।
- उपरोक्त विद्यालयों से विद्यार्थियों की सूची प्राप्त की गई जिनकी संख्या 800 थी। इनमें से यादृच्छिक विधि से 400 विद्याार्थियों का चयन किया गया है।
- इन चयनित विद्यार्थियों में से समस्तीपुर संभाग से 200 – 200 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

10.शोध का औचित्य

पाठयक्रम निर्माता पाठयक्रम में समाविष्ट पाठयक्रम का चयन कर विद्याार्थियों को सृजनशील बना सकेंगें उन विषय सामग्री चयन कर सकेंगें जिनके प्रति विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के अनुकूल है, तथा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु परिवर्तित कर सकेंगें।

4. **अध्यापकों की दृष्टि से** – इस विषय हेतु अध्यापकों को समुचित विधियाँ तकनीकी सुझावों का समावेश हो सकेगा तथा छात्रों की सृजनात्मकता के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकेगा अतः शिक्षक के लिए प्रस्तुत शोध कार्य निश्चित ही फलदायी होंगें।
5. **भाोधकर्त्री की दृष्टि से** – इससे शोधकर्त्री को सृजनात्मकता के प्रति जागरूकता एवं कियान्वन में आने वाली विभिन्न समस्याओं के अध्ययन हेतु उपकरणों के निर्माण में सुविधा होगी, अतः इस क्षेत्र में किये जाने वाला शोधकार्य शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रयास होगा।
6. **निर्देशन की दृष्टि से** –यह अध्ययन विद्यार्थियों की सृजनशीलता के स्तरों को समझने में सहायक सिद्ध होगा ऐसे घटकों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों को उचित निर्देशन व परामर्श देने में सुगमता रहेगी।

11.मानकीकृत उपकरण

सृजनात्मकता का मापन – माध्यमिक कक्षा के विद्याार्थियों की सृजनात्मकता के मापन हेतु सृजनात्मकता शाब्दिक प्रमापनी का उपयोग किया गया है। इस प्रमापनी का निर्माण डॉ. भगवती लाल व्यास ने किशोर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता योग्यता मापन करने के लिए किया। इस शोध उपकरण में चार घटकों का प्रयोग किया गया है।

1. प्रवाहिता
2. अनाग्रह
3. मौलिकता
4. संवैधता

12.विद्याार्थियों की सृजनात्मकता का विश्लेषण

शोधकर्त्री ने माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कुल 400 विद्यार्थियों के सृजनात्मक योग्यता परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं प्राप्तांकों की सीमा के आधार पर विश्लेषण किया।

सारणी 1: समग्र विद्यार्थियों की सृजनात्मकता के दत्तों का मध्यमान व मानक विचलन (N=400)

क.सं.	सृजनशीलता के क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1	प्रवाहिता	51.40	15.34
2.	अनाग्रह	23.84	5.59
3.	मौलिकता	16.96	3.90
4.	संवैधता	11.78	3.27

कुल सृजनशीलता 103.28

व्याख्या

उपर्युक्त सारणी में विद्यार्थियों की सृजनशीलता का मध्यमान 103.98 प्राप्त हुआ जो कि मानक सारणी के सामान्य सृजनशीलता के मान 76 से 115 के मध्य भाग है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सृजनशीलता सामान्य स्तर की है।

13.आंकड़ों के आधार पर सृजनशीलता के क्षेत्रानुसार विश्लेषण

1. प्रवाहिता – माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता प्रथम क्षेत्र प्रवाहिता के लिए मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 51.40 व 15.34 प्राप्त हुए जो मानक सारणी की सामान्य सृजनशीलता के मान 39 से 65 के मध्य आता है अतः यह मान इन विद्यार्थियों की प्रवहिता के क्षेत्र में सामान्य सृजनशीलता को दर्शाता है।
2. अनाग्रह – माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता के द्वितीय क्षेत्र अनाग्रह का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 23.84 व 5.59 प्राप्त हुए जो मानक सारणी की सामान्य सृजनशीलता के मान 17 से 25 के मध्य आता है। अतः यह मान इन विद्यार्थियों की अनाग्रह के क्षेत्र में सामान्य सृजनशीलता को दर्शाता है।
3. मौलिकता – माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता के तृतीय क्षेत्र मौलकता का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 16.96 व 3.90 हुए जो मानक सारणी की सामान्य सृजनशीलता के मान 11 से 21 के मध्य आता है। अतः यह मान इन विद्यार्थियों की मौलिकता के क्षेत्र में सामान्य सृजनशीलता को दर्शाता है।
4. संवैधता – माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनशीलता के चतुर्थ क्षेत्र संवैधता का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 11.78 व 3.27 प्राप्त हुए जो मानक सारणी की सामान्य सृजनशीलता के मान 5 से 9 के मध्य नहीं आता है। अतः यह मान इन विद्यार्थियों की संवैधता के क्षेत्र में सामान्य सृजनशीलता को नहीं दर्शाता है।

14.निश्कर्ष

5. विद्यार्थियों की क्षेत्रीय अनिर्भरता शैली, अभिसारी शैली, चिन्तनशील शैली, समतलीकरण शैली, और सृजनात्मकता के मध्य मध्यस्तरीय सह–सम्बन्ध पाया गया जबकि क्रियाकरण शैली और सृजनात्मकता मध्य निम्नस्तरीय सह–सम्बन्ध पाया गया।
6. क्षेत्रीय अनिर्भरता शैली और सृजनात्मकता के क्षेत्र प्रवाहिता में नगण्य, अनाग्रह व सम्बद्धता में निम्न स्तरीय व मौलिकता में मध्य स्तरीय सह–सम्बन्ध पाया गया।
7. चिन्तनशील शैली और सृजनात्मकता के क्षेत्र प्रवाहिता में निम्न स्तरीय, अनाग्रह व सम्बद्धता में मध्य स्तरीय व मौलिकता के क्षेत्र में उच्च स्तरीय सह–सम्बन्ध पाया गया।
8. समतलीकरण शैली और सृजनात्मकता के क्षेत्र प्रवाहिता व अनाग्रह क्षेत्र में निम्न स्तरीय तथा मौलिकता व सम्बद्धता क्षेत्र में मध्य स्तरीय सह–सम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, सुभाषचन्द्रः (1981). "लर्निंग स्टाइल ए न्यू एरिया ऑफ रिसर्च" जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेन्स, पृ. 172–177

2. अने सोदरमैन (2008).:"गर्ल्स स्ट्रगल मोर देन ब्वायज टू एडजस्ट इन लेंग्वेज–लर्निंग इनवायरनमेंट" अर्ली चाइल्ड हुड एजू. रिसर्च जर्नल (एनी) यूरोप
3. आर्थर, एल., गेट्सः एजूकेशनल साइकोलॉजी, थर्ड एडिसन, द मिलियन क. न्यूयार्क 1958, पृ. 614–66
4. आइजनेकःउद्धृत–पी.डी. पाठक शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ. 450
5. ओझा, राजकुमारःउद्धृत–पी–एच.डी., थीसिस राज जैन (2007). –"किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर कुण्ठा के प्रभाव का अध्ययन" श्री अग्रसेन स्वायत्तशासी पी.जी. कालेज वाराणसी सम्बद्ध वी.ब. सिंह पू.वि.वि. जौनपूर